भगिनी निवेदिता कॉलेज में 'भारतीय वास्तुशास्त्र का वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय ई-संगोष्ठी का आयोजन (31 जनवरी 2026)

भगिनी निवेदिता कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के ब्रह्मवादिनी भारतीय ज्ञान प्रणाली केन्द्र (IKSC) द्वारा 31 जनवरी 2026 को राष्ट्रीय ई-संगोष्ठी (व्याख्यान श्रृंखला का द्वितीय संस्करण) का सफल आयोजन ऑनलाइन माध्यम (Google Meet) के द्वारा किया गया। संगोष्ठी का विषय "भारतीय वास्तुशास्त्र का वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य" था। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. रूबी मिश्रा ने की। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. उमा शंकर, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय थे। अपने व्याख्यान में उन्होंने भारतीय वास्तुशास्त्र की वैज्ञानिक अवधारणाओं, पारंपरिक ज्ञान प्रणाली तथा आधुनिक जीवन में उसकी प्रासंगिकता पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वास्तुशास्त्र केवल आस्था-आधारित विषय नहीं, बल्कि मानव स्वास्थ्य, पर्यावरणीय संतुलन तथा सुव्यवस्थित जीवन से जुड़ा एक वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित ज्ञान-विज्ञान है। उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण एवं संवर्धन की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि इस प्रकार के शैक्षणिक कार्यक्रम विद्यार्थि यों एवं शोधार्थियों को भारत की समृद्ध बौद्धिक एवं सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने का प्रभावी माध्यम हैं। राष्ट्रीय ई-संगोष्ठी में देश के विभिन्न भागों से शिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। प्रतिभागियों ने विषय को अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं समसामयिक बताते हुए भारतीय ज्ञान प्रणाली के अंतर्गत वास्तुशास्त्र के वैज्ञानिक पक्षों को समझने का महत्वपूर्ण अवसर प्राप्त किया। कार्यक्रम की समन्वयक प्रो. सुषमा राणा रहीं। आयोजन समिति में डॉ. सीमा गुप्ता, डॉ. आशुतोष कुमार, सुश्री अंजु रानी तथा श्री संजय कुमार तिवारी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और कार्यक्रम के सफल संचालन में सक्रिय सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागियों को फीडबैक प्रपत्र भरने के उपरांत ई-प्रमाणपत्र प्रदान किए जाने की घोषणा की गई।

One-Day National E-Seminar on 'Scientific Perspective of Indian Vastu Shastra' Organized at Bhagini Nivedita College (January 31, 2026)

Bhagini Nivedita College, University of Delhi, through its Brahmavadini Indian Knowledge System Centre (IKSC), successfully organized the Second National E-Seminar in the Lecture Series on 31 January 2026. The seminar, conducted in the online mode through Google Meet, was based on the theme "Scientific Perspective of Indian Vastu Shastra." The programme was chaired by Prof. Ruby Mishra, Principal, Bhagini Nivedita College. The keynote address was delivered by Prof. Uma Shankar, Department of Sanskrit, University of Delhi. In his insightful lecture, he explained the scientific principles underlying Indian Vastu Shastra and highlighted its relevance in contemporary society. He emphasized that Vastu Shastra is not merely a belief-based tradition but a systematic scientific discipline concerned with human well-being, environmental harmony, and spatial planning. Prof. Uma Shankar stressed the importance of preserving and promoting India's rich knowledge traditions and observed that such academic initiatives provide an effective platform for connecting students with the country's intellectual and cultural heritage. The seminar witnessed enthusiastic participation from teachers, researchers, and students from different parts of the country through the Google Meet platform. Participants appreciated the programme for providing deeper insights into the scientific and cultural dimensions of Indian Knowledge Systems, particularly Vastu Shastra. The programme was coordinated by Prof. Sushma Rana and organized under the guidance of the Organising Committee comprising Dr. Seema Gupta, Dr. Ashutosh Kumar, Ms. Anju Rani, and Mr. Sanjay Kumar Tiwari, who ensured the smooth conduct of the event. The programme concluded with the announcement that e-certificates would be awarded to participants upon submission of the feedback form.

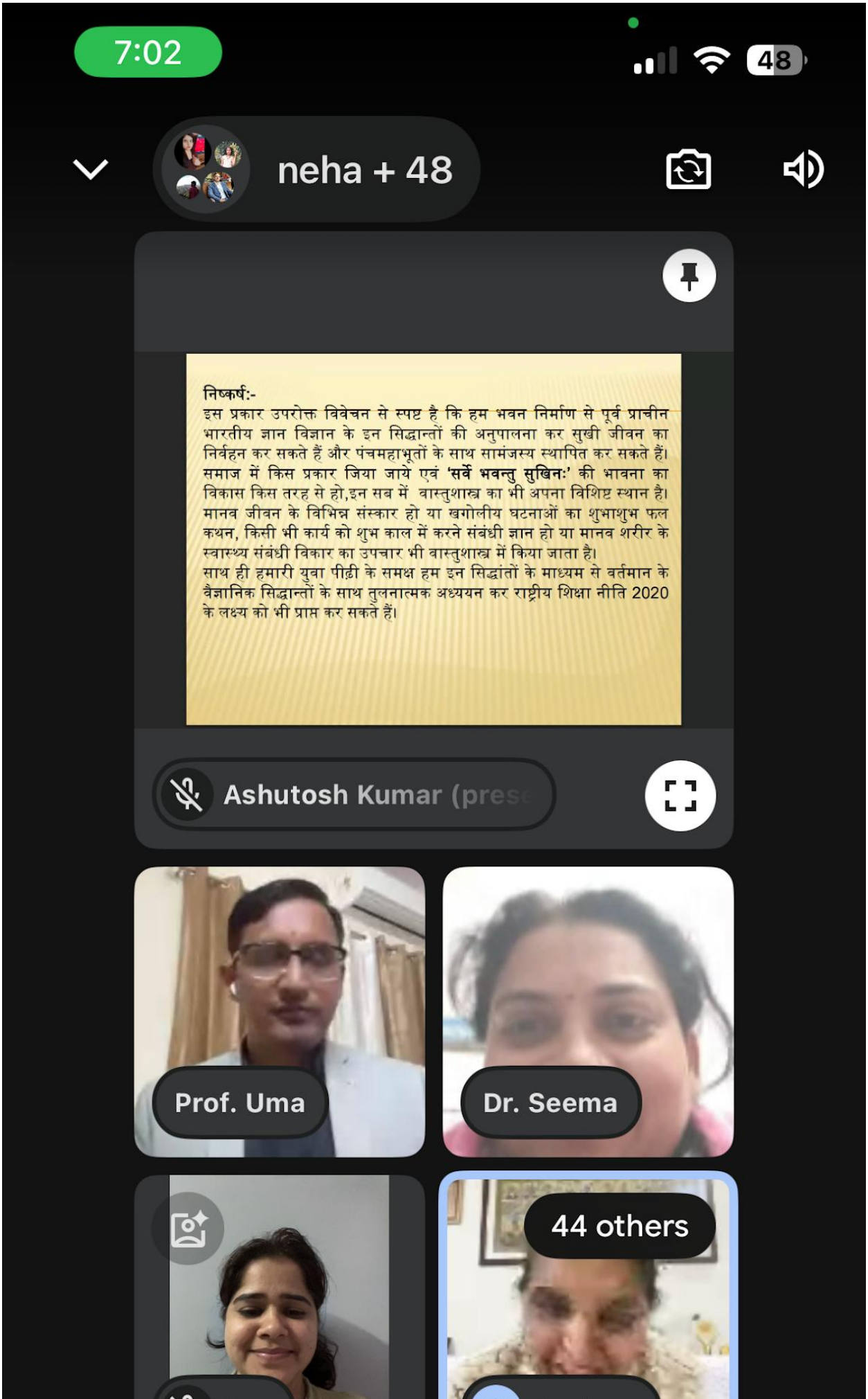

7:02
48
neha + 48
निष्कर्ष:-
इस प्रकार उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हम भवन निर्माण से पूर्व प्राचीन भारतीय ज्ञान विज्ञान के इन सिद्धान्तों की अनुपालना कर सुखी जीवन का निर्वहन कर सकते हैं और पंचमहाभूतों के साथ सामंजस्य स्थापित कर सकते हैं। समाज में किस प्रकार जिया जाये एवं **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** की भावना का विकास किस तरह से हो,इन सब में वास्तुशास्त्र का भी अपना विशिष्ट स्थान है। मानव जीवन के विभिन्न संस्कार हो या खगोलीय घटनाओं का शुभाशुभ फल कथन, किसी भी कार्य को शुभ काल में करने संबंधी ज्ञान हो या मानव शरीर के स्वास्थ्य संबंधी विकार का उपचार भी वास्तुशास्त्र में किया जाता है।
साथ ही हमारी युवा पीढ़ी के समक्ष हम इन सिद्धांतों के माध्यम से वर्तमान के वैज्ञानिक सिद्धान्तों के साथ तुलनात्मक अध्ययन कर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्य को भी प्राप्त कर सकते हैं।
Ashutosh Kumar (prese
Prof. Uma
Dr. Seema
44 others

6:13

65

neha + 35

वास्तु का अर्थ- वास्तु शब्द 'वस् वासे' धातु से निर्मित्त है जिसका अर्थ है- निवास करने योग्य भूमि या भवन। वास्तुविद्या का आद्योल्लेख ऋग्वेद के सप्तम मण्डल में वर्णित है।**(ऋग्वेद- 7/54/01)** 'मयमतम्' के अनुसार पृथिवी मुख्य वास्तु है उस पर जो भी निवासार्थ प्रासादादि बनाए जाते हैं वे सब भी वास्तु संज्ञा से ही अभिहित किए जाते हैं। **(मयमतम्-02/02)**

वास्तुशास्त्र के प्रमुख आचार्य- वैदिक वाङ्मय, पुराण, महाकाव्य, बृहत्संहिता तथा वास्तुविद्या के ग्रन्थों विश्वकर्मप्रकाश, मानसार, मयमतम्, वास्तुराजवल्लभ,समराङ्गणसूत्रधार,बृहद्वास्तुमाला,अपराजितपृच्छा, राजवल्लभमण्डन, शिल्परत्नादि के अनुशीलन से इसके अनेक आचार्यों का उल्लेख प्राप्त होता है-

भृगुरत्रिर्वसिष्ठश्च विश्वकर्मामयस्तथा।
नारदो नग्नजिच्चैव विशालाक्षः पुरन्दरः।।
ब्रह्मा कुमारो नन्दीशः शौनको गर्ग एव च।
वासुदेवोऽनिरुद्धश्च तथा शुक्रो बृहस्पतिः।।
अष्टादशैते विख्याताः शिल्पशास्त्रोपदेशकाः।।

(मत्स्य पुराण-252/2-4)

Ashutosh Kumar (presenting)

Dr. Seema

Ashutosh

31 others

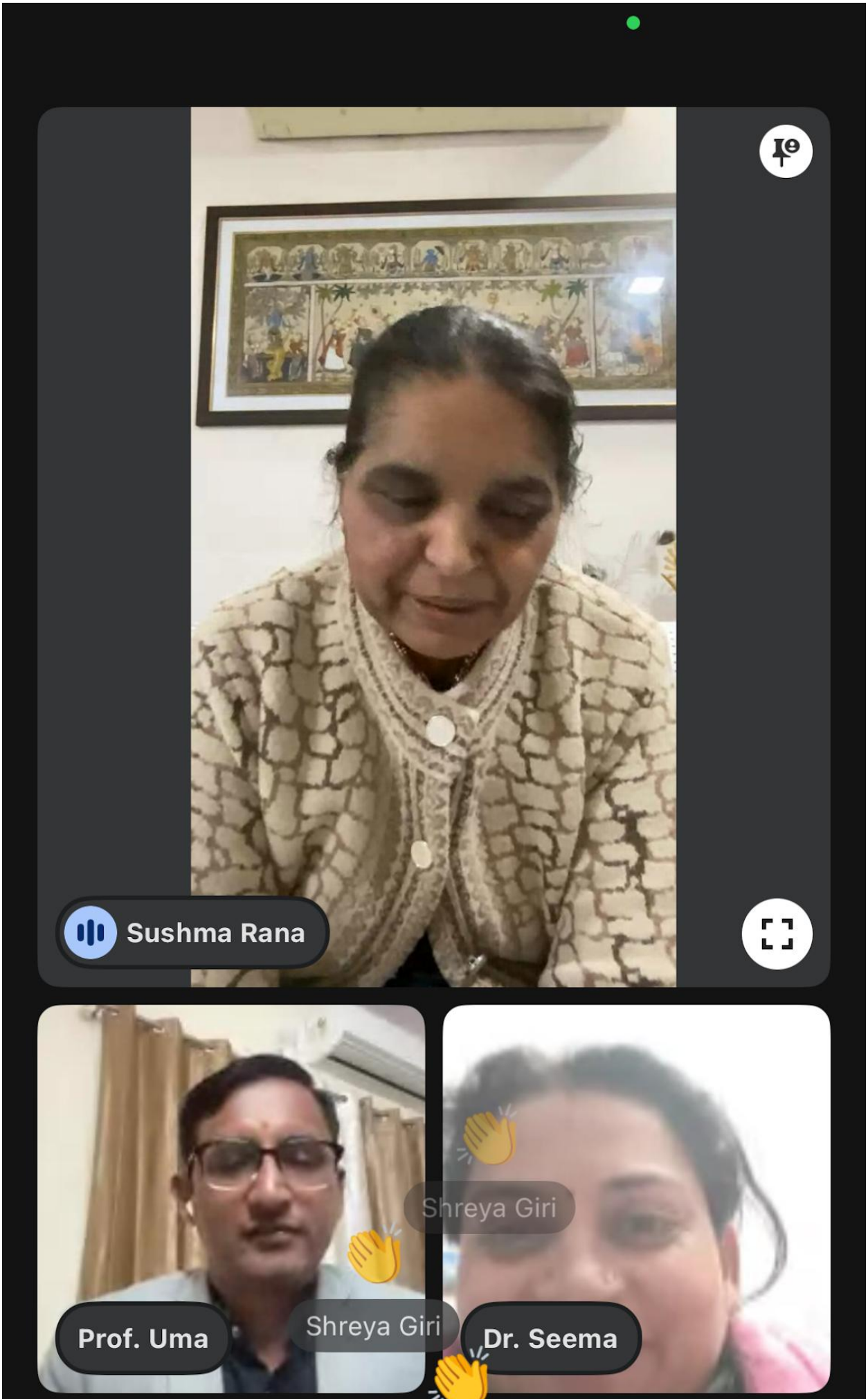
Sushma Rana
Prof. Uma
Shreya Giri
Shreya Giri
Dr. Seema

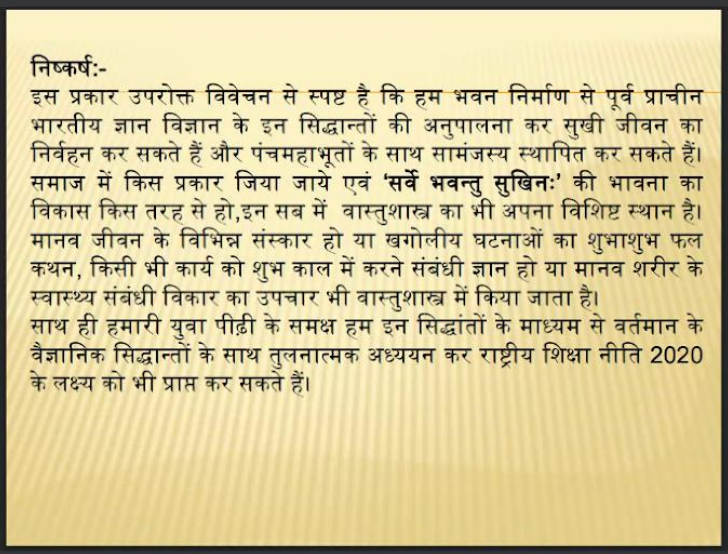

7:02
48
neha + 48
निष्कर्ष:-
इस प्रकार उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हम भवन निर्माण से पूर्व प्राचीन भारतीय ज्ञान विज्ञान के इन सिद्धान्तों की अनुपालना कर सुखी जीवन का निर्वहन कर सकते हैं और पंचमहाभूतों के साथ सामंजस्य स्थापित कर सकते हैं। समाज में किस प्रकार जिया जाये एवं **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** की भावना का विकास किस तरह से हो,इन सब में वास्तुशास्त्र का भी अपना विशिष्ट स्थान है। मानव जीवन के विभिन्न संस्कार हो या खगोलीय घटनाओं का शुभाशुभ फल कथन, किसी भी कार्य को शुभ काल में करने संबंधी ज्ञान हो या मानव शरीर के स्वास्थ्य संबंधी विकार का उपचार भी वास्तुशास्त्र में किया जाता है।
साथ ही हमारी युवा पीढ़ी के समक्ष हम इन सिद्धांतों के माध्यम से वर्तमान के वैज्ञानिक सिद्धान्तों के साथ तुलनात्मक अध्ययन कर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्य को भी प्राप्त कर सकते हैं।
Ashutosh Kumar (prese
Rakhi Tiwari
Prof. Uma
Dr. Seema
Rakhi Tiwari
44 others

6:30
59
neha + 41
चट्टानी क्षेत्र शहरों को चट्टान की तरह मजबूत बनाते हैं। निर्माण सामग्री जैसे- रेत, बजरी, ईंट, पत्थर, चूना, लकड़ी और सीमेन्ट आदि असल में पृथिवी के ही विभिन्न रूप हैं। इसीलिए भवन निर्माण से पूर्व भूमि परीक्षण का विधान है-
इसके अनुसार लगभग एक हाथ गहरा, चौड़ा और लम्बा गड्ढा खोदना चाहिए।फिर गड्ढे को उसी मिट्टी से पुनः भरना चाहिए। यदि मिट्टी गड्ढे से अधिक निकलती है तो भूमि श्रेष्ठ, गड्ढें में मिट्टी पूर्ण समा जाए तो भूमि मध्यम और मिट्टी कम पड़ जाए तो भूमि अधम समझनी चाहिए। प्रक्रिया का वैज्ञानिक रहस्य यह है कि यह भूमि के ढीलेपन की ओर संकेत करती है।
(दिशाओं की भार धारण क्षमता)
(दिशाओं के स्वामी ग्रह व दिक्पाल)
उ
50% 25% (−)0%
75% (±)0% 25%
100% 75% 50%
उत्तर
वायव्य
ईशान
पश्चिम
पूर्व
नैर्ऋत्य
दक्षिण
आग्नेय
Ashutosh Kumar (presentin
Dr. Seema
Ashutosh
37 others

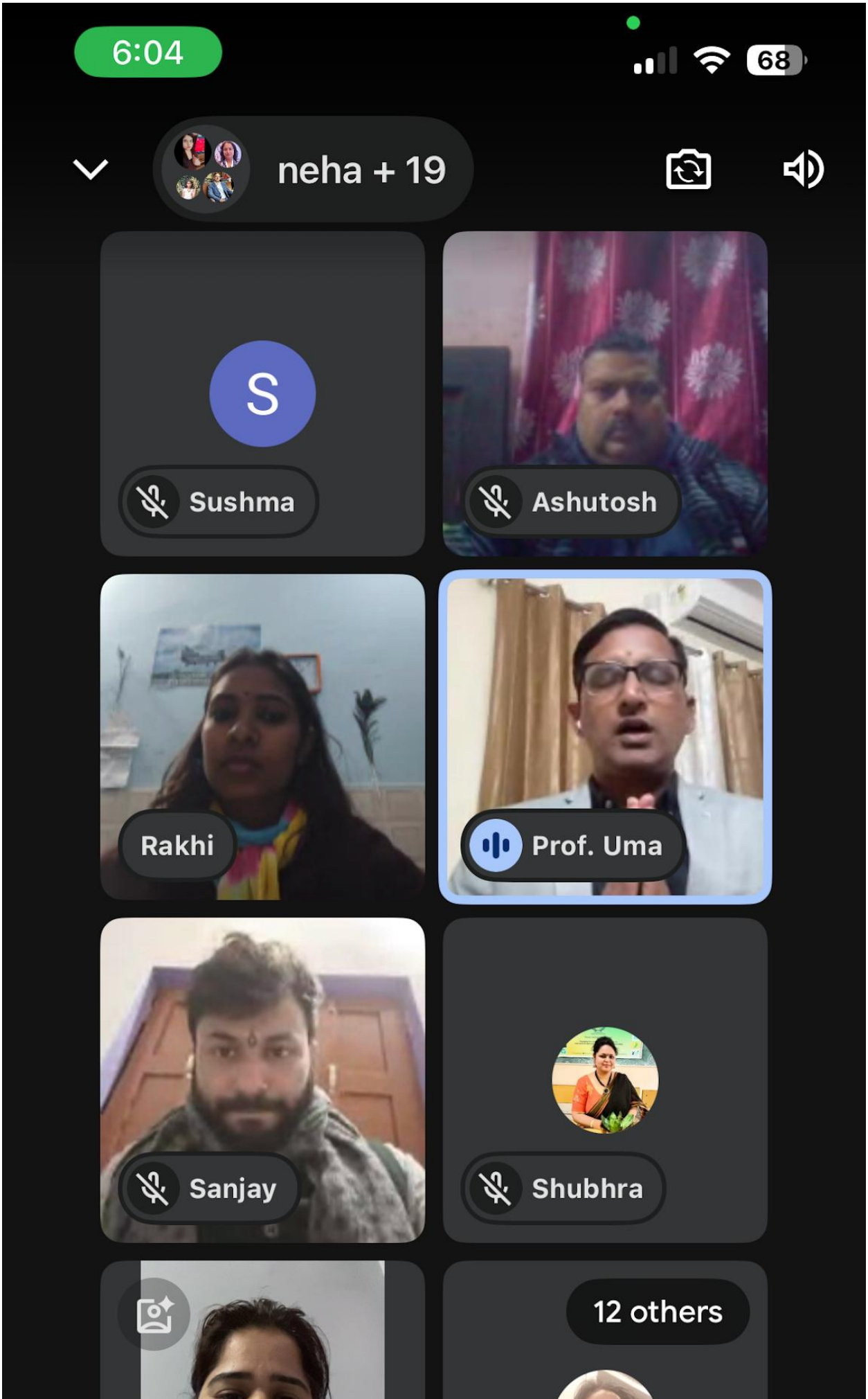
6:04
68
neha + 19
S
Sushma
Ashutosh
Rakhi
Prof. Uma
Sanjay
Shubhra
12 others

19:09
zxp-zrga-kgz
physics unravellec
Rahul
Anjula
DR.SARVENDRA
Anjali
2
Saurabh
Return to top